जैन धर्म की प्राचीनता

विश्व के सभी धर्मों से जैन धर्म प्राचीन है। कुछ लोगों का यह मानना कि जैन धर्म का प्रारम्भ महावीर स्वामी के समय से हुआ है, नितान्त भ्रामक है। महावीर भगवान तो वर्तमान काल की दृष्टि से जैन धर्म के अंतिम तीर्थकर हुये हैं। उनसे पूर्व 23 तीर्थकर और हो चुके हैं जिनमें प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव हैं।

जैन धर्म अनादि है :

जैन आगम के अनुसार भरत क्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र में प्रत्येक अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी काल में 24–24 तीर्थकर होते हैं। अभी तक अनन्त अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी काल हो चुके हैं। इस प्रकार अभी तक इन कालों में 24–24 तीर्थकर अनन्त काल से होते आ रहे हैं। इस प्रकार जैन धर्म भी अनादि काल से चला आ रहा है और अन्नत काल तक चलता रहेगा।

ढाई–द्वीप में 5 भरत, 5 ऐरावत व 160 विदेह (देशों) क्षेत्रों में हमेशा तीर्थकर होते रहते हैं और उनकी परम्परा चली आ रही है तथा भविष्य में भी चलती रहेगी। जैसे तीर्थकरों की परम्परा अनादि–निधन है, वैसे ही जैन धर्म भी अनादि है और यह कभी नष्ट भी नहीं होगा।

अवसर्पिणी काल के प्रारम्भ में भोगभूमि भी और भोजन, वस्त्र, आभूषण आदि आवश्यकताओं की पूर्ति बिना श्रम (कर्म) किये दस प्रकार के कल्प वृक्षों से हो जाती थी। यह स्थिति नौ कोड़ाकोड़ी सागर तक चलती रही। जब कल्पवृक्ष समाप्त होने लगे तो कर्मभूमि का प्रादुर्भाव हुआ। अवसर्पिणी के तीसरे काल के अन्त में कुलकर (मनु) होने लगे जो लोगों को जीवन–निर्वाह हेतु तरह–तरह की शिक्षायें देते थे। प्रथम कुलकर प्रतिश्रुति थे और अंतिम (चौदहवें) कुलकर नाभिराय हुये हैं। इनके पुत्र ऋषभदेव हुये हैं।

जैन धर्म के प्रथम तीर्थकर :

आज से असंख्यात वर्ष पूर्व अवसर्पिणी के तृतीय काल के अंत में अयोध्या में राजा नाभिराय के यहां जैन धर्म के प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव का जन्म हुआ था। वर्तमान हुण्डावसर्पिणी काल के ये जैन धर्म के प्रथम उपदेशक थे। इन्होंने लोगों को अपनी आजीविका चलाने हेतु षट्–कार्यों आदि की शिक्षायेंद ी थी। ये षट् क्रियायें निम्न हैं : –

(1) असि :– शस्त्र चलाना।
(2) मसि :– लेखन (खाता – बही आदि) कार्य।
(3) कृषि :– खेती का कार्य।
(4) वाणिज्य :– व्यापार का कार्य।
(5) शिल्प :– दस्तकारी अर्थात् हाथ की कारीगरी से वस्तुयें बनाना।
(6) विद्या :– गायन, वाद्य, नृत्य, चित्रकारी आदि।

उपरोक्त 6 कार्यों के आधार पर प्रारम्भ में समाज को तीन भागों में विभक्त किया गया था :–

(1) क्षत्रिय :– असि अर्थात् अस्त्र आदि के द्वारा दूसरों की रक्षा करके आजीविका करने वाले।
(2) वैश्य :– मसि, कृषि और वाणिज्य के द्वारा अपनी आजीविका करने वाले।
(3) शूद्र :– शिल्प व विद्या के द्वारा अपनी आजीविका करने वाले।

इस प्रकार प्रथम तीर्थकर ने लोगों को आजीविका करने हेतु और अपनी आत्मा के कल्याण के लिये विभिन्न क्रियाओं का उपदेश दिया। इस प्रकार वर्तमान युग की अपेक्षा से ऋषभदेव जैन धर्म के प्रथम उपदेशक हुये हैं और उन्हे जैन धर्म के वर्तमान युग का प्रथम प्रवर्तक माना जाता है। इनकी दो रानियॉ थी – यशस्वती और सुनन्दा। यशस्वती के भरत आदि सौ पुत्र और बौंी पुत्री थी तथा सुनन्दा के बाहुबली पुत्र और सुन्दरी पुत्री थी। इस प्रकार इनके भरत, बाहुबली आदि 101 पुत्र और ब्रौंी व सुन्दरी दो पुत्रियां थी। भगवान ऋषभदेव ने ब्रौंी को लिपि विद्या (अ, आ, इ, ई आदि वर्ण) तथा सुन्दरी को अंक विद्या (1, 2, 3 आदि संख्या) सिखाई और पुत्रों को भी विभिन्न प्रकार की विद्याओं और कलाओं में प्रवीण किया। भगवान ऋषभदेव ने 1000 वर्ष तक तप किया और चतुर्थ काल शुरू होने से 3 वर्ष व 5 $^{1/2}$ माह पूर्व ही मोक्ष चले गये।

भगवान ऋषभदेव के पुत्र भरत इस युग के प्रथम चक्रवर्ती सम्राट हुये हैं। इनके ही नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा है। कालान्तर में उन्होंने ब्राह्मण वर्ण का प्रारम्भ किया।

भगवान ऋषभदेव के पश्चातृ अभी तक असंख्यात वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और इस अवधि में जैन धर्म के 23 तीर्थकर और हो चुके हैं। इन्होने अपने–अपने समय में उसी जैन धर्म की प्रभावना की। 20 वें तीर्थकर मुनिसुव्रत नाथ के समय मर्यादा पुरूषोत्तम राम हुये और 22 वें तीर्थ नेमिनाथ के समय में कृष्ण आदि हुये। कृष्ण जी तीर्थकर नेमिनाथ जी के चचेरे भाई थे। नेमिनाथ भगवान के 84, 650 वर्ष पश्चात् भगवान पार्श्वनाथ का जन्म हुआ। उनके 278 वर्ष पश्चात् महावीर भगवान का जन्म हुआ।

महावीर भगवान :

महावीर भगवान का जन्म सन् 599 ईसा पूर्व (बी.सी.) में हुआ और मोक्ष सन् 527 ईसा पूर्व में हूआ है। इस समय चतुर्थ काल की समाप्ति में 3 वर्ष व $8^{1/2}$ माह का समय शेष था। इनके पश्चात् जैन धर्म का अन्य कोई तीर्थकर नहीं हुआ है अर्थात् ये जैन धर्म के इस काल के अन्तिम तीर्थकर हैं और आजकल इनका ही शासन काल चल रहा है।

भगवान महावीर के पश्चात् की स्थिति :

भगवान महावीर के मोक्ष जाने के पश्चात् अब तक 2535 वर्ष से अधिक अवधि गुजर चुकी है। इस अवधि में यद्यपि तीर्थकर कोई नहीं हुआ, किन्तु केवली, आचार्य आदि

अनेक महापुरूष हुये हैं जिन्होंने जैन धर्म की प्रभावना को आगे बढ़ाया है। इनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है :–

(1) तीन अनुबद्ध केवली :– गौतम स्वामी, सुधर्मा स्वामी और जम्बू स्वामी तीन अनुबद्ध केवली इस पंचम काल में मोक्ष गये हैं। इनका काल 62 वर्ष (527 ईसा पूर्व से 465 ईसा पूर्व) है।

(2) पांच श्रुतकेवली :– द्वादशांग रूप समस्त श्रुत के जानने वाले महामुनि को श्रुतकेवली कहते हैं। विष्णुकुमार, नंदिमित्र, अपराजित, गोवर्द्धन और भद्रबाहु नामक पांच श्रुतकेवली हुये हैं। इनका काल 100 वर्ष (465 ईसा पूर्व से 365 ईसा पूर्व) है। इनके पश्चात् पंचम काल में अन्य कोई श्रुतकेवली नहीं हुये हैं। यहां तक सम्पूर्ण ज्ञान–प्रवाह अनवरत चलता रहा और इसके पश्चात् आचार्यों की स्मृति क्षीण होने लगी।

(3) ग्यारह दश–पूर्वी :– विशाखाचार्य, प्रोष्ठिलाचार्य, क्षत्रिय, जयसेन, नागसेन, सिद्धार्थ, धृतिषेण, विजय, बुद्धिलिंग, गंगदेव और धर्मसेन नाम के ग्यारह आचार्य ग्यारह अंग और दस–पूर्व के धारी हुये हैं। इनका काल 183 वर्ष (365 ईसा पूर्व से 182 ईसा पूर्व) है।

(4) पांच ग्यारह–अंगधारी :– नक्षत्र, जयपाल, पांडु, ध्रुवसेन और कंसाचार्य नाम के पांच मुनि हुये हैं जिन्हें ग्यारह अंग का ज्ञान था। इनका काल 220 वर्ष (182 ईसा पूर्व से ईस्वी सन् 38) है।

(5) चार आचारांगधारी :– सुभद्राचार्य, यशोभद्र, यशोबाहु और लोहाचार्य नामक चार आचार्य एक अंग (आचारंग) के धारी हुये हैं। इनका काल 118 वर्ष (ईस्वी सन् 38 से 156) है।

इनके अलावा जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में और कोई भी आचार्य अंग–पूर्व के धारक नहीं हुये हैं। इनके अंशो को जानने वाले अवश्य हुये हैं। इस प्रकार महावीर स्वामी के पश्चात् 683 वर्षों तक अंगो का ज्ञान रहा। लोहाचार्य के पश्चात् विनयदत्त, श्रीदत्त, शिवदत्त, अर्हदत्त, अर्हद्बलि, माघनन्दी और धरसेन आदि आचार्य हुये जो क्षीण अंग के धारी थे। इस अवधि तक कोई भी शास्त्र लिपिबद्ध नहीं था। आचार्य धरसेन ने सोचा कि मुनियों की स्मृति क्षीण होने लगी है और इस प्रकार श्रुत का लोप हो जावेगा। अतः उन्होने महिमानगर (महाराष्ट्र) में हो रहे साधु सम्मेलन से दो योग्य साधुओं को बुलाया। उनकी परीक्षा लेने पर आचार्य धरसेन को यह विश्वास हो गया कि दोनों शिष्य ज्ञानी हैं। अतः उन्होने दोनों को शिक्षा दी और उनके नाम पुष्पदंत और भूतबलि प्रसिद्ध हुये।

दोनों शिष्यों ने मिलकर जैन आगम के महान् सिद्धान्त ग्रंथ ''षट्–खण्डागम'' की रचना की और ईस्वी सन् 156 में ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी के दिन चतुर्विध संघ एवं देवों ने

इसकी पूजा की। इसी वजह से यह तिथि जैनों में ''श्रुत–पंचमी'' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

इनके पश्चात् अनेक महान् आचार्य हुये हैं। इनमें प्रमुख हैं – कुन्दकुन्द, उमास्वामी, समन्तभद्र, पूज्यपाद, योगीन्दु देव, मानतुंग, अकलंक, रविषेण, जिनसेन, विद्यानन्दी, वीरसेन आदि। इन महान् आचार्यों में सर्वोच्च स्थान आचार्य कुन्दकुन्द को प्राप्त है।

आचार्य कुन्दकुन्द :

दिगम्बर आम्नाय के सिरमौर आचार्य कुन्दकुन्द का जन्म कौण्डकुन्दपुर (कर्नाटक) में हुआ था। पूर्व जन्म (ग्वाले) में उन्होने मुनि श्री को शास्त्र भेंट किये थे। इस शास्त्र – दान के प्रभाव से इनका जन्म सेठ के घर हुआ। बचपन में उन्होंने मुनि जिनचन्द्र के दर्शन किये और उनका उपदेश सुना। वे उपदेश से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने 11 वर्ष की अल्प आयु में ही दीक्षा ग्रहण कर ली। जिनचन्द्र आचार्य ने प्रतिभाशाली शिष्य कुन्द–कुन्द को 33 वर्ष की आयु में ही आचार्य पद प्रदान कर दिया। उमास्वामी इन्हीं के शिष्य थे। इनके पांच नाम थे – पद्मनंदि, कुन्दकुन्दाचार्य, वक्र–ग्रीवाचार्य, एलाचार्य और गृद्धपिच्छाचार्य। इनका आचार्य काल ई. सन् 127–179 है।

इन्हें चारण–ऋद्धि प्राप्त थी जिसके फलस्वरूप ये भूमि से चार अंगुल ऊपर चल सकते थे। ये अपनी जिज्ञासा दूर करने हेतु पूर्व विदेह की पुण्डरीकणी नगरी गये और वहां तीर्थंकर सीमंधर स्वामी की वन्दना की और उनकी दिव्य–ध्वनि सुनकर आये।

गिरनार पर्वत पर श्वेताम्बर आचार्यो के साथ हुये वाद–विवाद के समय पाषण निर्मित मूर्ति से अपने यह कहलवा दिया था कि दिगम्बर धर्म प्राचीन है।

आपने समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, पन्चास्तिकाय, रयणसार, मूलाचार, अष्टपाहुड़ आदि अनेक महान् ग्रन्थों की रचना की। आप जैसे तत्त्वज्ञानी मुनि अन्य नहीं हुये है। आपको, जैन–जगत में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है और इसी कारण मंगल श्लोक ("मंगलं भगवान चीरो, मंगलं गौतमोगणी, मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन धर्मोऽस्तु मंगलं'') में भगवान महावीर तथा गौतम स्वामी के पश्चात् आपका नाम आदर सहित लिया जाता है।

इन महान् आचार्यो ने अनेक उच्च कोटि के ग्रन्थों की रचना की है और जैन परम्परा को अक्षुण्ण रखने में अविस्मरणीय योगदान दिया है। यह उनके परिश्रम का ही फल है कि आज संसार में जैन धर्म का अस्तित्व है।